

1857

के दहकते अंगारे

अवध के क्रांतिकारी तालुकेदार



REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

सरनाम सिंह

ठाकुर दरियाव सिंह

क्रांतिकारी तालुकदार

ठागा फतेहपुर

दरियाव सिंह प्रसिद्ध क्रांतिकारी-स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने कानपुर में विद्रोह के नाना साहब पेशवा के नेतृत्व में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अपने ही शस्त्र को उल्टा कर फेंकने के लिये क्रांति का संवाजन किया था। उन्हें छात्र और फतेहपुर के सरकारी खजाने को 8 और 9 जून 1857 को लूटने और फूटने के अभियोग में 6 मार्च 1858 को फाँसी पर लटकवा दिया गया था।

दरियाव सिंह जनपद फतेहपुर के तालुका ठागा के क्रांतिकारी तालुकदार थे। जिनोंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 में खुलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा था। उनके नेतृत्व में पूरा जनपद अंग्रेजों के विरोध में खड़ा हो गया था। जिसके कारण 30 दिन तक जनपद फतेहपुर में अंग्रेजी सत्ता समाप्त हो गई थी। सम्पूर्ण जनपद शांति से मुक्त होकर स्वतंत्र हो गया था। जिले के अंग्रेज अफसर डर कर अपनी पत्न बचाने के लिये लुक-छुपकर रात में दूसरे जिले को भाग गये थे। जनपद की शांति और एकीकृत क्षेत्रों की आम जनता ने दरियाव सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजी सत्ता को लुका दिया था। परन्तु अंग्रेज अफसर और उनके कर्मचारी सब मिलकर इनसे जुड़ रहे थे। परन्तु पता नहीं पा रहे थे। जिले का कलेक्टर जेठ डेब्लू शेरर डर कर अपनी रात को राबको साथ लेकर जमुना पार करके बौदा भाग गया था। उसने फतेहपुर जिले की उस समय की सही स्थिति का वर्णन करते हुये लिखा कि अंग्रेज तो जहाँ में अपने अधिकार डिये बैठे हैं, पर व्यवहार में गाँवों की जनता ने उसे अवैधता कर दिया है। जनता है कि जनता अंग्रेजों को मारा है। लोगों में घोर उत्तेजना है।²

फतेहपुर की स्थापना :-

प्रदेश में फतेहपुर नाम के कई गाँव, कई बरगने और कई तहसीलें हैं, जिनकी संख्या 96 है, परन्तु फतेहपुर नाम का कोई जिला नहीं है। अगर जिले में फतेहपुर सीकरी और कायबंदी जिले में फतेहपुर नाम की तहसीलें हैं। फतेहपुर जिला की अलग पहचान बनाने के लिये अक्सर काल से इसका नाम फतेहपुर समूचा गलत जाता था। फतेहपुर नाम से प्रतीत होता है कि किसी मुस्लिम शासक ने यहाँ पर फाटल फजल चतुर्थी स्मृति में फतेहपुर नाम की बस्ती बसाई थी। इस सम्बन्ध में फतेहपुर के सन 1850 के सत्ताधीन तहसीलदार दलैल हुदा साहब की रिपोर्ट बताती

1. रिपोर्ट दरियाव फतेहपुर 1857, पृष्ठ 250

2. रिपोर्ट शेरर, दलैल साहब और रि. न्यूनी, पब्लिश एक्सीपेरियन्स ऑफ 1857, पृष्ठ 5

सह

ये। उन्होंने कानपुर के
संवर्द्धन संग्राम में अंग्रेजी
दिया था। सन् 1857 को लूटने और
दिया गया था।¹
का खाणा के क्रौंतिकी
अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा
गया था जिसके कारण
गई थी। सम्पूर्ण जनपद
हिसार डर कर अपनी जान
से थे। जनपद की शहरी
अंग्रेजी सत्ता को चुनकर
कर इनसे जुड़ रहे थे।
डर कर अन्धों रात को
अपने फतेहपुर जिले की
होम तो शहरों में अपने
स्वीकार कर दिया है।
ही है।²

कई परगने और कई
जिला नहीं है। अगला
राजधानी है। फतेहपुर
जम फतेहपुर हनुआ
शायक ने यही पर
थी। इस सम्बन्ध में
की रिपोर्ट बारी

है कि अठ्ठवीं शताब्दी के प्रथम चरण में यहाँ पर आठ किस्मों के स्वामी राजा सतानन्द
का राज था जिन्हें अठ्ठगढ़ियाँ का राजा कहा जाता था। सन् 1405-07 में जौनपुर
के सुल्तान इब्राहिम शर्की ने जनपद चढ़ाई करके फतह पाकर यहाँ फतेहपुर नाम की
बस्ती बसाया था।¹

कुछ लोग बंगाल के शासक सुल्तान जलालुद्दीन को कुछ लोग फतेहमद
थान की उदार को इसका संस्थापक मानते हैं, परन्तु कोई निश्चित साक्ष्य न होने के
कारण इसे स्वीकार नहीं किया गया है।

राष्ट्र क्षेत्र अत्यंत प्राचीन है। गंगा नदी के आगमन के पूर्व यहाँ मिलौरा में भृगु
जि का आश्रम था, जिन्होंने गंगा की धारा को पूर्व की ओर मोड़ दिया था जो आज
नी चार-पांच कि०पी० उत्तर की ओर बहती है। देवताओं के बीच अन्नमयी कुमार की
तपस्थली यहीं भसनी में थी। वहीं पर गांधी पुत्र विष्णुकिशोर का राज्य था। माय का
में वह क्षेत्र कन्नौज शासकों के अधीन था। "जयचंद ने असमों और इथार्जित में अपने
किले बनवाकर अपना खजाना असमों के किले में छिपा रखा था, कहा उनके साक्षात्कार
का प्रमुख केंद्र था।"²

मुस्लिम काल में "मोहम्मद गोरी यहाँ आकर असमों में जयचंद का खजाना लूटा
और इथार्जित में जयचंदी गस्तिद बनवाई, जो उत्तर भारत में पहली मुस्लिम मस्जिद
थी।"³ सन् 1658 में औरंगजेब का अपने कई जुला से और सन् 1712 में फर्रुखसिंह
का जहाँदार के पुत्र अकबरुद्दीन ने यहीं के खजुहा में युद्ध हुआ था। "सन् 1735 में
यहाँ के शासक भगवत राय खोधी को अकब के सुल्तान ने पतनित करके मार डाला
और इस इलाके को अकब खुं में मिला दिया था।"⁴

अंग्रेजों का प्रवेश सन् 1764 में बिहार के ख्वास युद्ध के बाद नयाग शुनसुदीला
से सन् 1765 में हुई संधि के पश्चात् हुआ, जिसमें इलाहाबाद और फतेहपुर जिले के
कहा इलाके अंग्रेजों को सौंप दिए गये थे।⁵

इसके 36 वर्ष बाद सन् 1801 ई. में अंग्रेजों ने अकब के भाव सआदत अली
के उत्तरदायी शासक सन्धि करके फतेहपुर की साथ गोरखपुर से लेकर रुहेलखण्ड
तक के अठ्ठगढ़ जिले ले लिये थे। उस समय इसका क्षेत्र कानपुर और इलाहाबाद के
को जिलों में विभाजित था, जिसके प्रशासन के लिये सन् 1814 ई० में यहाँ के मिर्ठीरा
को मुख्यालय बनाकर एक ज्वाइंट मजिस्ट्रेट की नियुक्ति की गई।⁶

1. अध्यापिका फतेहपुर की 2. पृष्ठ 180 को रिपोर्ट का फतेहपुर सु-मोबाइल 1984, पृष्ठ 180
2. पुस्तकालय केवल फतेहपुर फतेहपुर 1905, पृष्ठ 168
3. अध्यापिका फतेहपुर, फतेहपुर 1905, पृष्ठ 168 (1905), पृष्ठ 30-31
4. अध्यापिका फतेहपुर, फतेहपुर 1905, पृष्ठ 168-169
5. अध्यापिका फतेहपुर, फतेहपुर 1905, पृष्ठ 168-169
6. अध्यापिका फतेहपुर, फतेहपुर 1905, पृष्ठ 168

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

प्राचीन प्रशासनिक कठिनाईयों आने के कारण 10 नवम्बर 1826 ई. को फतेहपुर को
मुजफ्फरगढ़ बना कर जिला बना दिया गया।

फतेहपुर से जामपुर पश्चिम में 17 कि०मी० पर और इलाहाबाद पूरब में 118
कि०मी० पर है। इसके उत्तर में गंगा नदी पार उन्नाव और रायबरेली तथा दक्षिण में
जमुना पार बोंया और हमीरपुर जिले हैं। गंगा और जमुना नदियों के मध्य में होने के
कारण इस क्षेत्र का क्षेत्र कड़ा जाता है। इस जिले से राष्ट्रीय मार्ग संख्या दो जी०डी०
रोड निकलता है, जो जमनपुर और इलाहाबाद को जोड़ता है। मुगल सड़क से दिल्ली
आने वाले उत्तर रेलवे का फतेहपुर स्टेशन है।

खागा तालुका की स्थापना—

स्थानीय मान्यता के अनुसार 'ठाकुर दरियाव सिंह के पूर्वज खडग सिंह द्वारा
खागा बसाया गया था।' 1 उन्होंने पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सन् 1406-07 के
असमन अपने नाम से खागा को बसाकर अपना तालुका स्थापित किया था। इसके
पहले यहाँ भर शासक का राज था, जो यहाँ से दक्षिण पश्चिम में 3-4 कि०मी० दूर
कुकात-कुकरी नामक स्थान पर रहता था, जिस पर होली के दिन खडग सिंह ने बड़ाई
करके उसे मार डाला और अपने नाम से खागा बसाया।

तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में अक्सर के कई जिलों बहराइच, बाराबंकी,
लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, फतेहपुर, इलाहाबाद और मिर्जापुर में भर जाति के लोग
बहुत बड़ी संख्या में रहते थे। खागा से पश्चिम 7 कि०मी० के गाँव भरखना 2 (भरो
की खान अर्थात् अधिकता) इलाहाबाद तहसील के भरवारी 3 (भरो की बाड़ी अर्थात्
निवास) तथा हैमवारा के संस्थापक त्रिनोकचंद के जन्मस्थान रायबरेली-उन्नाव की
तीन से गाँव कोटभर 4 (भर का कोट या किला) इसके उदहारण हैं। रायबरेली
सेलेक्टेड रिपोर्ट 1887 पृष्ठ 5 के अनुसार 'वैसी के आगमन से पहले बक्सर क्षेत्र में भरों
की आजादी थी।' भरों का शासन बहराइच के बमनौटी (बौड़ी), बाराबंकी के समनगर,
रायबरेली के डलमऊ और भौली तथा फतेहपुर के असनो और कोट एवं कुकात-कुकरी
में स्थापित था। वे भर हिमालय की तराई से यहाँ आये थे। विलियम क्रुक्स ने इनकी
'जमीन बर्ती या उत्खनन बताई है।' 5 सन् 1874 के जिला मजिस्ट्रेट रायबरेली के पृष्ठ
26 के अनुसार डलमऊ से 3-4 किमी० पर एक गाँव पखरौली है, जहाँ भर शासक
इतनी बत की भूतिया स्थापित है, जिनकी पूजा स्थानीय अहीर करते हैं, वे अपने
को भौलिया अहीर बताते हैं। हिमालय की तराई से आने वाले भर दूसरी-तीसरी
शताब्दी के भारतीयों से बिल्कुल अलग और भिन्न थे।

1 जिला मजिस्ट्रेट फतेहपुर 1880 पृष्ठ 250

2 यह जामपुराज अर्थात्, प्रान्त बमनौटी, जमुनपुर, पृष्ठ 108

3 जिला मजिस्ट्रेट इलाहाबाद 1915 पृष्ठ 230

4 जिला मजिस्ट्रेट 1877 पृष्ठ 108

5 विलियम क्रुक्स, 'द इंडिया एंड बक्सर और नया देश' इन्डियन एंड अल (1888-90)

काग्रेस पृष्ठ 28

इस काशी प्रभाव जायसवाल ने इन नरों को भारशिव नहीं माना है। उन्होंने बताया कि जायसवाल का यह दावा है, जो शिव उपासक और नाम सम्प्रदाय के अनुयायी थे।¹

भर शासकों के राज्य या शासन बाहर से आये अधिकार कृतियों द्वारा भी लिये गये। कुछ यूरेलम शासकों द्वारा भी कब्जा कर लिये गये। 'रायवरेली के इलमक के डल और भरीली के बल भर शासकों पर सन् 1406 में जौनपुर के सुल्तान खानिब खान ने छोली के दिन हमला करके मार डाला और अपना शासन स्थापित कर लिया।'² उसके पश्चात् 'सुल्तान इकी मंगपास करके इस क्षेत्र के आठ किलों के स्वामी अजगदिगों के राजा सतानन्द पर हमला करके फतेह पाकर यहाँ पर फतेहपुर नाम की बरती बसाया।'³ इसी समय खड्ग सिंह ने कुकुरा-कुकरी के भर शासकों को मार कर खागा की स्थापना की थी। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि इलमक और कुकुरा-कुपारी के भर शासक एक समय में थे, जिनका विनाश भी एक ही समय में एक साथ हुआ था और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि फतेहपुर बरती और खागा तालुकों की स्थापना आगे-पीछे एक ही समय में हुई थी।

'सन् 1852 में अंग्रेजों ने खागा को छहसील बना दिया।'⁴ और 'सन् 1927 में दो राजस्व गौरी शहजादपुर खागा और बहादुर पुर खागा को मिलाकर उसे टाउन एरिया बनाया गया।'⁵ इसके मध्य से जी०टी० रोड और एक विद्युतीय दक्षिण में मुलगासराय से दिल्ली की रेलवे लाइन गुजरती है, जिसका स्टेशन खागा ही है। इसके पूर्व में 83 कि०मी० पर इलाहाबाद और पश्चिम में 112 कि०मी० पर बगलपुर है। यहाँ से दक्षिण-पश्चिम में 35 कि०मी० पर जिला मुख्यालय फतेहपुर है।
वंश परिचय:-

'सिंगरीयों ने दरियाव सिंह के नेतृत्व में क्रांति के समय जिला फतेहपुर में (अंग्रेजों को) बहुत कष्ट पहुँचाये।'⁶ सन् 1857 के नायक दरियाव सिंह को फिलियम कुक्स ने सिंगरीय बांडिया लिखा है, उन्होंने उत्तर-पश्चिम सूबों तथा अक्स सूबे की जातियों और परम्पराओं के विषय में विस्तार से लिखा है। उन्होंने फतेहपुर जनपद के सिंगरीय और गौतम क्षत्रियों के वंशों का भी उल्लेख करके 'फतेहपुर के अरगल राजा गौतम की शादी कन्नौज के गहरवार राजा जयचन्द की बहिन से होना लिखा है।'⁷

1. इस काशी प्रभाव जायसवाल, जोयार बुलिया नाम, पृष्ठ 81, 84, 85

2. जिला इतिहास रायवरेली 1924, पृष्ठ 25

3. फतेहपुर एवं पश्चिम 1924, पृष्ठ 115

4. जिला इतिहास फतेहपुर 1920, पृष्ठ 200

5. जिला इतिहास फतेहपुर 1920, पृष्ठ 250

6. जिला इतिहास फतेहपुर 1920, पृष्ठ 200 और नरेंद्र बरत प्रसिद्ध एण्ड अन्ध (1895ई०) खण्ड दो

7. जिला इतिहास फतेहपुर 1920, पृष्ठ 200 और नरेंद्र बरत प्रसिद्ध एण्ड अन्ध (1895ई०) खण्ड दो

अपनी वंशीयों ने लक्ष्मिणी की शादी अपने उच्च वंशीय परिवार में करने की परम्परा है। इनका स्पष्ट हो जाना है कि गौतम वंश गृहस्थार वंश से उत्पन्न था। दरियाव सिंह का अनिर्वात और समुद्राल दोनों गौतम वंश में थे। इसलिये सिंगरीर वंश गौतम वंश से उत्पन्न था।

दरियाव सिंह की पूर्वज इलाहाबाद से 37 कि०मी० उत्तर-पश्चिम में रहा किनार 'सिंगरीर' स्थान (वर्तमान कौशाम्बी जिला) से जिला फतेहपुर के सरसाई गौड़ आये थे। इनका मूल स्थान राजस्थान था। परन्तु राजस्थान से कब और क्यों वे आये, इसका लिखित प्रमाण नहीं मिलता है। मध्यकाल की तरहवी-पन्द्रहवीं शताब्दी में सम्राट-कमर पर बाह्य से विदेशी मुसलमान आक्रांता राजस्थान और गुजरात के इलाकों पर हमला करके स्थापित हो गये। इन सूबों की सीमा बाहरी देशों से मिली होने के कारण मुसलमानों का यहाँ आना सरल था। इनकी न्यादितियों एवं दुर्कृतवहार से उत्पन्न होकर यहाँ के मूल वासिदा, जिसमें अनेक क्षत्रिय वंश भी थे समूहों में आकर प्रजा के विरोध इलाकों में स्थापित हो गये। इन्हीं समूह में से एक समूह राजस्थान से आकर सिंगरीर पहुँचा, जिसमें कई वंश और गोत्र के क्षत्रिय सम्मिलित थे। उस समूह गुजरात और गुजरात से आने वाले प्रमुख क्षत्रिय वंश थे—

कलहसः— "राजस्थान के मेवाड़ के धितौड़गढ़ से महलीत गोण्डा आकर अपने पूर्वज कलमोज और दादी हंसाबाई के नामों के काल और हंस को मिलाकर कलहस हो गये। महलीत मूलरूप से लक्ष्मण के सूर्यवंशी थे। पहाड़ की गुफा में जन्म लेने के कारण गूहा या 'गूहादित्य' कहा जाने लगा, जो बदलकर महलीत हो गया।" 2

जागडा— "राजस्थान के अजमेर से चौहान लखीमपुर—खीरी के धीरहरा तानुके आये जहाँ राम जंगल खोजनी राजा की उपाधि पाई। उसी उपाधि के नाम से जागडा हो गये।" 3

जनवार— "जनवार मूलतः चन्द्रवंशी हैं, जो गुजरात के पावागढ़ राज्य के जनवाडा से बहमदशाह आकर जगवाडा से आने के कारण जनवार हो गये।" 4

अहबन— "अहबन मूलरूप से चण्ड क्षत्रिय हैं, जो गुजरात के बल्लभी राज्य से अनतलवाडा बसे आये थे, वहाँ से सीतापुर और लखीमपुर आकर अनतलवाडा से आने के कारण अहबन हो गये।" 5

सिखार— "सिखारों का मूल वंश सूर्यवंशी है, जो जम्मू के रायका से आने के कारण सखार हो गये।" 6

1. सिंगरीर स्थान पर 1950 ई. पृष्ठ 30

2. अहबन स्थान पर 1950 ई. पृष्ठ 30-31

3. सिंगरीर स्थान पर 1950 ई. पृष्ठ 30-31

4. सिंगरीर स्थान पर 1950 ई. पृष्ठ 30-31

5. अहबन स्थान पर 1950 ई. पृष्ठ 30-31

6. सिंगरीर स्थान पर 1950 ई. पृष्ठ 30-31

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि क्षत्रियों के मूल स्थान बदलने पर उनके वंश बदलकर उगी नाम से हो जाते थे, जिस स्थान से वे आते थे। दसिदास सिंह के पुर्वज राजस्थान से पहले सिंगरीर आये, फिर वहीं से जिला फरीदपुर के गांव सरसई चले आये। इनके साथ राजस्थान से आने वाले अलग-अलग वंश और गोत्र के क्षत्रिय भी सिंगरीर से ऊँई स्थानी पर आकर स्थापित हो गये। जिन सभी को सिंगरीर वाले कहकर पुकारा जाने लगा, उन्हें कालान्तर में उनकी पहिचान बनकर उनका वंश सिंगरीर हो गया। परन्तु उनके गोत्र नहीं बदले। अलग-अलग गोत्र होने पर भी सिंगरीर से आने के कारण सभी सिंगरीर क्षत्रिय कहे जाते थे। इन अनेक गोत्रों में विभाजित सिंगरीर क्षत्रियों की श्रद्धा सिंगरीरों के अलग-अलग गोत्रों में की जाने लगी, जो वर्तमान में भी प्रचलित है। ये राजस्थान से आने वाले क्षत्रिय समूह वैसे ही सिंगरीर कहे जाने लगे, जैसे जनवाड़ा से आने वाले जगवान, अनडलवाड़ा से आने वाले अहदन और रायगा से आने वाले रैकार कहे जाने लगे, बाद में वही उनके वंश हो गये। यह परभारा क्षत्रियों के अलावा ब्राह्मण में भी पाई जाती है। पंडित जगज्ज लाल नेहरू के पुर्वज कश्मीर से आकर दिल्ली में नहर बनाने के कारण नेहरू कहकर पुकारे जाने लगे, जो बाद में उनकी पारिवारिक पहिचान बनकर उनका वंश हो गया। इसी धौरे समूहों से आने वाले ब्राह्मण सरयूपारी और जमनीज से आने वाले ब्राह्मण कायकुब्ज कहे जाते हैं।

अजय की सिंगरीर त्रेतायुग का शृंगेरपुर था, जिसे श्रृंगी ऋषि का आश्रम बताया जाता है वैसे इनका आश्रम बिहार के जिला लखीसराय में खुल रेलवे जंक्शन से आगे कजरा रेलवे स्टेशन से चार-पांच किलोमीटर दूर श्रृंगी पहाड़ पर होना माना जाता है। वहीं से कुछ ही दूर पर गंगा नदी बहती है। राजा दशरथ ने पुत्र प्राप्ति यज्ञ से श्रृंगी ऋषि को बुलाया था। तुलसीदास रामायण में लिखा है कि :
 'श्रृंगी शिषिहि वशिष्ठ बुलायो। पुत्र काम भुम गज करता।।'
 (बालकाण्ड दोहा-109)

रामायण से यह भी ज्ञात होता है कि राम वनगमन के समय शृंगेरपुर पहुँचे थे।
 "सीता सहित दोह भाई। शृंगेरपुर पहुँचे जाई।।"
 (अयोध्या काण्ड, दोहा-87)

परन्तु राम के श्रृंगी ऋषि आश्रम जाने या उनसे मिलने का उल्लेख नहीं है, केवल केवट की नाव से गंगा पार उतरने का वर्णन है। इससे प्रगट होता है कि श्रृंगी ऋषि वहाँ नहीं थे, वरना राम खिन्न उनसे मिले नहीं जाते। क्योंकि वे अपने कायका के रास्ते में रुकने वाले सभी ऋषियों के अलग जाकर उनसे अवश्य मिलने की सकता है कि शृंगेरपुर में श्रृंगी ऋषि का आश्रम रहा ही न हो क्योंकि वर्तमान में इसके कोई चिन्ह नहीं मिलता है और न वही किसी स्थान विशेष में श्रृंगी ऋषि का आश्रम होना बताया जाता है। जबकि केवट की निवास स्थान के प्रमाण मिले।

फिर और देव सिंह थे, जिनकी शादियों भी रामपुरी जिले के मोठम वंश में ही हुई थी। इनके एक भाई निर्मल सिंह थे जो निरस्तान थे।

दरियाव सिंह का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली था। बड़ी-बड़ी सत्ता और शक्ति थी, नमकला मुख, विशाल वक्षस्थल, ऊँचा कद, सिर पर बंधी हुई लट, गले में लटका की माला और दहिने लटकती हुई तलवार उनके व्यक्तित्व में चार चीजें लगाती थी। ये बड़े शक्तिशाली पराक्रमी और वीरपुरुष थे। इनमें राजनैतिक सूझ-बूझ और वातुर्ग के साथ संगठन क्षमता अद्वितीय थी, इनने स्वाभिमान कट-कट कर भरा था। ये शक्ति के साथ भक्ति के उपाराक भी थे। इन्होंने दुर्गा मंदिर और हनुमान मंदिर बनवाकर नित्य उनकी पूजा करते थे। ऐसा बताया जाता है कि पूजा करते समय उनकी तलवार स्वतः जमीन से एक हाथ ऊपर उठ जाती थी। इनके द्वारा तलवारों का आदर सातवार बड़ी निष्ठा से किया जाता था। एक बार साधुओं का एक दल हरिद्वार से इलाहाबाद कम स्नान करने जाते समय इनके यहाँ रुका। उसका बुद्ध स्वगत किया और उनकी इच्छानुसार पूड़ी का छिलका दूध के साथ कई दिनों तक खिलाया। बात के महत्त्व ने ज्ञाते समय इनकी एक गुदड़ी देकर कहा कि इसे अलग सुरक्षित रखना और आवश्यकता पड़ने पर जितना धन चाहे, इसमें हाथ डालकर निशान लेना। इनके गरिबार में गुदड़ी का आज भी सम्मान होता है। गुदड़ी पर न कोई बैठा है और न कोई लेटता है।

खाना की गद्दी-

एक छोटे-मोटे किला के समान इनकी गद्दी थी, जो बहुत मजबूत और सुरक्षित थी, उसकी मोटी-मोटी दीवालें बालू से बनी हुई थी, जिसके चारों ओर घने की गहरी खाई थी। गद्दी में सात पक्के कुएँ और एक बड़ा कुआँ इंदारा था। इसके अंदर एक बड़ा गोल पक्का चबूतरा पहलवानों की पहलवानी के लिये बना था। इस गद्दी को 1857 की क्रांति में मेजर रेनाल्ड ने 11 जुलाई 1857 को धरासाई करके मटियामेट कर दिया था, जिसके अवशेष आज भी विद्यमान हैं। वहीं पर दरियाव सिंह की क्रांति लगाकर उनका स्मारक बनाया गया है।

क्रांति में भागीदारी:-

ठाकुर दरियाव सिंह के द्वारा की गई क्रांति ही फतेहपुर की क्रांति है। वो उनके द्वारा प्रारम्भ की गई और पूरे जिले में फैल गई, उनसे पूरे नौ महीने अंग्रेज कुत्ते रहे, पर उनको न चोंक पाये और न झुका पाये, बल्कि उन्होंने अंग्रेजों को जिंदा मार डाला जगह कड़ी टक्कर देकर नाकों घने चबूआ दिये। अंग्रेज लेखक विलियम क्रुस ने उनके सम्बन्ध में लिखा है कि "क्रांति के समय दरियाव सिंह के नेतृत्व में फतेहपुर जिले में (अंग्रेजों को) बहुत कष्ट पहुँचाया" और उन्होंने सहयोग और साथ देने वाले प्रमुख क्रांतिकारी थे:-

है, जिसकी पुष्ट्याद विभाग ने खुदाई करवाई पराग लगाया है, जराके गवर्नर की पत्नी जिने
है, जिसको लेखक ने स्वयं जाकर देखा है। यह भी संभाव है कि भृगुदेव पुर का नाम
भृगी से न होकर किसी अन्य नाम से हो।

इससे इतना तो स्पष्ट है कि जेतायुग में भृगुदेवपुर नाम का स्थान था, जो
कलियुग में बदलकर सिगरीर हो गया, जहाँ ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी में दरियाव सिंह
के पुर्नज राजस्थान से आकर स्थापित हुये थे। सिगरीर में आकर रहने पर कुछ लोग
अन्यथा दृष्टि भृगी जटि से जोड़कर उनकी संतान बताने लगे, जिसका कोई औचित्य
नहीं है और न यह सही प्रतीत होता है। इसके प्रमुख तीन कारण हैं -

एक - भृगी जटि जेता युग में हुये थे, जबकि दरियाव सिंह के पुर्नज कलियुग में ईसा
की पन्द्रहवीं शताब्दी में राजस्थान से सिगरीर आये थे।

दो - जेतायुग में क्षत्रियों के केवल दो वंश सूर्यवंश और चन्द्रवंश का उल्लेख मिलता
है, जिसकी बाद में कई उपशाखाएँ हो गईं, मगर इन उपशाखाओं में सिगरीर वंश का
उल्लेख नहीं है।

तीन - भृगी क्षत्रि ब्राह्मण थे, जबकि सिगरीर क्षत्रिय हैं।

इन तथ्यों के अन्तर्गत पर सिगरीर क्षत्रियों को भृगी जटि की संतान बताना
मेरे मत से तर्क संगत और सही नहीं प्रतीत होता है। यह तथ्यापरक नहीं है और प्रमाण
रहित भ्रम पर अन्वर्तित धारणा है। केवल सिगरीर से आने के कारण इस समुह के
विभिन्न गोत्र के क्षत्रिय सिगरीर कहे जाने लगे, जो बाद में कई स्थानों पर जाकर रहने
लगे, जिनके गोत्र अलग-अलग बने रहे, मगर उनकी पहचान सिगरीर की रही, बाद
में उन सभी का वंश सिगरीर हो गया।

वंशावली :-

दरियाव सिंह से आठ पीढ़ी पहले बाबुराय के बाद की वंशावली प्राप्ता है। एक पीढ़ी
से दूसरी पीढ़ी का अन्तराल 30 वर्ष माना जाता है। दरियाव सिंह का जन्म सन् 1795
ई० में हुआ था। इस प्रकार 8x30 = 240 वर्ष पूर्व अर्थात् सन् 1555 ई० में बाबुराय
हुये थे। इससे सौ डेढ़ सौ वर्ष पूर्व इनके पूर्वज राजस्थान से सिगरीर आये थे। जहाँ
दो-तीन पीढ़ी रहकर वहाँ से जिला फतेहपुर के सरसई गाँव चले आये अर्थात्
1555-80 = 1485 ई० में सरसई आ गये, जहाँ तीन पीढ़ी (90 वर्ष) बाद सन् 1375
ई० में खड्ग सिंह पैदा हुये, जिन्होंने सन् 1405 ई० में अपने नाम से खासा बसाकर
अपना तालुका स्थापित किया।

व्यक्तित्व :-

दरियाव सिंह का जन्म सन् 1795 में खासा में हुआ था। इनका वंश सिगरीर क्षत्रिय
और गोत्र बत्स था। इनके पिता नरैन सिंह खासा के तालुकेदार थे और माता गीताम
वंश की इसी जिले के पुदगन ग्राम की थी। इनकी पत्नी का नाम सुगंधा था, जो
जयपुरवासी के सरसी ग्राम के गोतम वंश की थी। "1 जिनसे दो पुत्री एवं दो पुत्र सुख

1. डॉ० सुनील सिंह, ईलाहाबाद का अध्यापक (1992 ई०), पृष्ठ 200

1. पथ पदशक और नीचा -

सन् 1857 का 32 वर्ष, वैष्णु, धामपुर-लहरी लहरी बेगम हजरत महल के साथ
नेपाल गले गये।

2. साथी एवं सलाहकार-

(अ) राजा देवी माया सिंह 60 वर्ष, हाँकपुर, रायबरेली-लहरी - लहरी बेगम हजरत
महल के साथ नेपाल गले गये।

(ब) राजा लखन सिंह 50 वर्ष, जौहिया खेड़ा, बनारस-फौजी दी गई।

3. जगपद के सहयोगी -

(अ) सिद्धांत उल्लाह जी 59 वर्ष, ब्रिटिश सरकार के डिप्टी कमिश्नर, अंग्रेजों ने फतेहपुर
में मार काट दिया।

(ब) जहा सिंह अट्टा रतूजपुर, तहसील विदंकी-छावनी इशली पर फौजी दी गई।

(ग) सिद्धांत सिंह रघुवरी 42 वर्ष, जगरीवा, तहसील फतेहपुर-फौजी दी गई।

(घ) बाबा गयादीन दुबे 66 वर्ष, कोशी, तहसील फतेहपुर-जेल में अकालमारी का लो।

(च) लखन सिंह रायपुर बहुर, तहसील फतेहपुर-अंग्रेज पकड़ न पाये-अज्ञात रहे।

4. परिवार के सहयोगी-

1. सुजान सिंह 40 वर्ष, दरियाव सिंह के छोटे पुत्र, दरियाव सिंह के साथ
फौजी दी गयी।

2. निमल सिंह 56 वर्ष, दरियाव सिंह के अन्ज-दरियाव सिंह के साथ
फौजी दी गयी।

3. बख्तावर सिंह 30 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे-दरियाव सिंह के साथ
फौजी दी गयी।

4. राजेश सिंह 37 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे-दरियाव सिंह के साथ
फौजी दी गयी।

5. सुरज सिंह 40 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे-दरियाव सिंह के साथ
फौजी दी गयी।

6. रामपुर सिंह 59 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भाई-युद्ध में वीरगति प्राप्त।

7. लखन सिंह दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे-युद्ध में वीरगति प्राप्त।

5. कोशि धारण-

29 मार्च 1857 को कोलकाता की बैरकपुर छावनी में
अंग्रेजों की बलिष्ठ निगरानी में मंगल पाण्डेय ने अंग्रेजों पर पहली गोली चलाकर कोशि
का श्री गुरु कर दिया। 30 मई को भरत चौधरी फूट कर अंग्रेजों का सफाया करके
दिल्ली लौट कर बागदुर साह जंगल को हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित कर दिया। 30
मई को लखनऊ की गढ़िया छावनी धू-धु कर जल गयी। जिसकी लपट दस दिनों
तक जंगल में अंग्रेजों का स्वाह कर दिया।

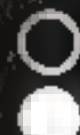
अनेक वर्षों के बाद मैंने लिखा कि 'इस रात दोस दिन में ही आका से आनेकी रात'।
 अनेक वर्षों के बाद मैंने लिखा कि 'इस रात दोस दिन में ही आका से आनेकी रात'।
 अनेक वर्षों के बाद मैंने लिखा कि 'इस रात दोस दिन में ही आका से आनेकी रात'।

[illegible]
$$\hat{y} = \frac{1}{n} \sum_{i=1}^n y_i$$

$\mu = \frac{1}{n} \sum_{i=1}^n x_i$

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

REDMI NOTE
MI DUAL CAMERA



अपने लोग सहारा करेगा। उनकी कुछ सारी, जो बरखा में रुके थे, उन्हें बंद जानले की बड़ी उत्सुकता थी कि वही मेरी कितनी रसक सेना है और विपक्षी दल की व्यवस्था है। हिकमत उल्ला बड़ी मित्रता से सादृभावना प्रगट करके अपने सचिवों के साथ वापस चले गये।¹ क्रांतिकारियों ने उस दिन की कार्यवाही स्थगित करके रातों में विश्राम करने चले गये और दूसरे दिन 10 जून को हमला करने की योजना बनाई गई।

अंग्रेजों का पलायन:-

कलेक्टर जेफरियस रीसर ने लिखा है कि "केवल 50 टुकड़ों को छोड़कर हम सभी इस नतीजे पर पहुँचे कि इस परिस्थिति में कुछ समय के लिये यहाँ से चले जाने में अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं है। परन्तु जागू कहीं जाये क्योंकि कानपुर इलाहाबाद और पड़ोसी जिला सलीम (साम्बेरी) में घटने में क्रांति हो चुकी थी। अब केवल बाधा ही बचा था, जहाँ अभी क्रांति नहीं हुई थी। जैसे ही क्रांतिकारी सन्धि विभाग के लिखे चले गये, इस रात छोटी रात सवार होकर जमुना नदी की ओर पलायन कर गये और रात में ही सलीम भाग से नदी पार करके बाढ़ा पहुँच गये।"²

फतेहपुर शहर 10 जून, बुधवार:-

9 जून की रात में ही सभी अंग्रेज अफसर बाढ़ा भाग गये परन्तु जिला जज जेफरियस नहीं गये। उनकी कलेक्टर रीसर से अच्छी नहीं पड़ती थी। दूसरे उनकी पत्नी बच नहीं थी, आग में थी। वह यही रुक कर क्रांतिकारियों का सामना करने चाहते थे परन्तु सबके चले जाने से वे प्रकट हो गये, इसलिये वह रात ही में अपने मित्र एम हिलेरी ग्राम कोरई के बड़े जमीनदार बाबा गयादीन दुबे के पास सहारा माँगे पहुँचे, बाबा से सहारा का आश्वासन पाकर वे रात ही में लौट आये। बाबा ग्राम अपने सैनिकों के साथ आये, मगर यहाँ का नजारा देखकर वे क्रांतिकारियों के राक्षस हो गये। क्रांतिकारियों का जनसमुह सुजान सिंह के नेतृत्व में पहले जेल पहुँचकर कैदियों को छुड़ाकर अपने साथ लेकर खजाने और कचहरी पहुँचकर कब्जा कर लिया और कचहरी पर विजय ध्वज फहरा दिया। जिला जज टुकड़ों अपने बड़े खुले सैनिकों के साथ कड़ी टुकड़ों देता रहा, वह खजाने की छत पर चढ़कर मोर्चा सम्भालकर क्रांतिकारी समूह पर गोलियाँ चलाता रहा। परन्तु अंत में अपनी पराजय देखकर गोली मारकर आत्म हत्या कर ली, उसने मरने से पहले अड़ा फहराने वाले नुम्वज पर बाबा गयादीन दुबे विश्वासघाती है लिख दिया। इसी आधार पर बाद में बाबा पकड़े गये और उनको मौत की सजा दी गई, परन्तु उन्होंने जेल में आत्महत्या कर ली।

इस प्रकार खावा और फतेहपुर दोनों स्वतंत्र हो गये अंग्रेजी शासन समाप्त हो गई, क्रांतिकारियों का पूरे जिले में अधिकार हो गया। इसकी सूचना कानपुर-बिठूर

1. बी.एम. मुन्निंग इन क्रांतिकारी सन्धि रात, मुजफ्फर जिला जज (1908 ई.) पृष्ठ 502-03

2. एडमिरल रीसर, लॉर्ड कैप्टन रीसर, अफगानिस्तान जिला फतेहपुर पृष्ठ 3-4

हुये वा सौ क्रांतिकारी घुड़सवारों और पास-पड़ोस के गाँवों की उसीही जनता को लेकर प्रातः सूर्योदय के पूर्व फतेहपुर पहुँच गये। उपर अंग्रेजों पाकर जनसभा के जगुर शिवायात सिंह और अटैया जगुरपुर के लालू जोगा सिंह भी अपने सैनिकों और शशिबी राहिल आ गये। सब एकजुट होकर खजाने की ओर कूच किया। जिसका वर्णन फतेहपुर के तत्कालीन कलेक्टर जो ठक्कू शेर ने इस प्रकार किया है कि "७ जून मंगलवार को लगभग प्रातः ४ बजे शहर में एक जनसमूह बड़े जोर के साथ खजाने की ओर कूच किया, जहाँ गाँवों ने हथियार तान दिये, उनके सूबदार ने घोषणा की यदि खजाने को लूटने का कोई प्रयास हुआ, तो गोली चला दी जायगी। तब जनसमूह जेल की ओर मुड़ गया, जहाँ जेल के गाँवों ने भी शोक दिया। इसके बाद जनसमूह मिशन भवन की प्रेस बटेरियन रोसादटी के कार्यालय पहुँच कर आग लगाकर वहाँ की सम्पत्ति लूटा लाया।" क्रांतिकारियों ने डाक बगला, अंग्रेज अफसरों तथा रेलवे इंजीनियरों के बगलों को फूक कर सरकारी कार्यालयों में आग लगाकर स्वाहा कर दिया। अंग्रेज अफसर अपने परिवारों के साथ इधर-उधर भागकर छिपकर अपनी जानें बचाई।

खजाना और फतेहपुर की सूचना आग की तरह चारों ओर फैल गई। गाँवों की जनता अपने-अपने हथियार जो भी उनके पास थे, लेकर झुंड के झुंड फतेहपुर पहुँचने लगी और क्रांतिकारियों का साथ देने लगी, जिनको रोकने के लिये अंग्रेज जी-जान से जुट गये और उनको तितर-बितर करने का प्रसार करने लगे मगर उनके सफलता नहीं मिल पा रही थी। वे जैसी एक स्थान को खाली कराके दूसरी ओर जाते वैसे ही हजारों का झुंड फिर वही एकत्र हो जाता था। "इस जनसमूह का रोकने के लिये जज मिस्टर टक्कर अपने कुछ सवारों के साथ शहर के दूसरे छोर पर बटे हुये थे।" २

क्रांतिकारी नेताओं ने दिन में दो बजे कार्यवाही रोककर अंग्रेजों के कदम दिवली डिप्टी कमेक्टर हिकमत खाना खाँ से मिलकर उनकी सहायता और सहयोग माँगा। उन्होंने देश प्रेम की भावना से प्रेरित होकर उनका अनुरोध स्वीकार करके स्थानीय फौजानों और मरदमन्तों का भी साथ देने का आश्वासन दिया। कमेक्टर जेम्स डब्ल्यू शेर ने लिखा कि "वे (हिकमत खाना खाँ) सात घंटे बड़े सन्तुष्टिपूर्ण तथा अन्य मुसलमानों के साथ मर-मिटकर सर आये। मैंने उनके अकेले बुलावा और भीड़ को बाहर छोड़ आने का अनुरोध किया। परन्तु इस फौजान ने देकर धाड़ी देर में पूरा परिवार सहकारी भीड़ से भर गया। हिकमत खाना खाँ को तीन-चार क्रांतिकारी नेताओं के साथ मेरे पास लाया गया। मैंने उनके आलाप पूछा उन्होंने जवाब दिया कि मुझे शहर की आजादकता से बचाने में सफल

१. जगुर शिवायात सिंह का जन्म १८८० ई. में हुआ था।
२. जगुर शिवायात सिंह का जन्म १८८० ई. में हुआ था।

नाना साहब के पास पहुँची, उन्होंने हिकमत उल्ला एगो जनपद का प्रशासक बनाकर घातरेदार नियुक्त कर दिया।¹ अब कानपुर से लेफ्ट इलाहाबाद तक यह इलाका अंग्रेजी सत्ता से मुक्त हो गया था।

अंग्रेजों का पतनकार:-

अंग्रेजों के लिये माइ जून 1857 अभिशाप बन गया, लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों के साथ सम्पूर्ण आंध्र और बुन्देलखण्ड मुल्तग उल और एक-एक करके सभी जिलों से उनकी सत्ता गिर गई। अंग्रेजों ने इसकी प्रतिक्रिया हुई, वे सजग हुए और अपने धुंधले जनसत्ता और विरोधियों को बुलाकर पुनः अधिकार करने के लिये जुटा दिया। सबसे पहले जनरल नील 11 जून को इलाहाबाद पहुँचकर किले पर कब्जा कर लिया।² उन्होंने मेजर रिनार्ड को फतेहपुर और कानपुर पर कब्जा करने का आदेश दिया। यह इलाहाबाद से 27 जून को पला रास के मोड़ों को फूटता हुआ निरीह जनता को रागीतों से भौंकता हुआ 5 जुलाई को खागा से 5 कि०मी० पहले कटौधन में पहुँचकर पड़ाव डाला। 10 जुलाई को मेजर रिनार्ड ने एकाएक खागा पर हमला कर दिया, जहाँ दरियाव सिंह एवं सुजान सिंह उसे कड़ी टक्कर दी, वह पराजित होकर लौट आया।³ उधर कानपुर के नाना साहब को जब रिनार्ड के आगे बढ़ने की सूचना प्राप्त हुई, तब उन्होंने अपनी सेना को उसको रोकने के लिये भेज दिया, जो फतेहपुर के पास बिलन्दा में रुकी हुई थी। दरियाव सिंह रिनार्ड को खदेड़कर खागा से बिलन्दा नाना साहब की सेना के पास चले आये। इसकी सूचना पाते ही मेजर रिनार्ड ने उसी दिन फिर से खागा पर आक्रमण करके गढ़ी, महल और जनसत्ता के धरौ की गिरा कर बर्बाद कर दिया और निरीह जनता को मार-मार कर खागा को श्मशान बना दिया।

फतेहपुर की विजय:-

जनरल हैबलाक 10 जुलाई को इलाहाबाद से चलकर 11 जुलाई की रात में खागा पहुँचा, वहाँ उसे सब वीरान मिला। वहाँ से वह रिनार्ड की सेना से मिलने के लिये आगे बढ़ा और रात ही में एक बड़े बिलन्दा पहुँच गया। दोनों सेनायें बिलन्दा में मिल गईं। फतेहपुर यहाँ से 8 कि०मी० दूर था। बरसात का मौसम था, सड़क की दोनों किनारे शमी भरा हुआ था। हैबलाक एक दिन विश्राम करना चाहता था। मगर क्रोतिवारियों की सेना ने विश्राम नाना साहब की 3500 पैदल सेना के साथ घुड़सवार सेना और 12 तोपें थी।⁴ एकाएक अंग्रेजी सेना पर घात हमला होल दिया। पहले अंग्रेजी सेना शान्त रही, क्रोतिवारियों को अंग्रेजी सेना की सही स्थिति ज्ञात नहीं थी। इसलिए इनका हल्ला बेकार हो गया और उनके गोला बारूक समाप्त हो गया। तब

1. आर्य समाज के पुस्तकालय में सूचना विभाग 3090 (1858 ई०), पृष्ठ 503
2. आर्य समाज के पुस्तकालय में सूचना विभाग 3090 (1858 ई०), पृष्ठ 507
3. आर्य समाज के पुस्तकालय में सूचना विभाग 3090 (1858 ई०), पृष्ठ 124-25
4. आर्य समाज के पुस्तकालय में सूचना विभाग 3090 (1858 ई०), पृष्ठ 506

अंग्रेजी सेना ने इन पर खुले मैदान में जोरदार आक्रमण किए दिया। भयंकर युद्ध हुआ। इस भयंकर युद्ध का वर्णन एक अंग्रेज अधिकारी ने किया है कि 'मैंने अपने जीवन में कभी कभी संघर्ष नहीं देखा है।' 12 जुलाई दिन रविवार को यह युद्ध प्रायः 8 बजे से रात 5 बजे तक हुआ। अंग्रेजी सेना विजय प्राप्त करके फतेहपुर में प्रवेश कर गई। अंग्रेजी सेना वापस चली गयी। अंग्रेजी का पुनः फतेहपुर पर कब्जा हो गया। फतेहपुर शहर को जी भरकर लूटा और आग लगा दी।

जीम का युद्ध 15 जुलाई 1857 :-

यह युद्ध राना साहब के बड़े भाई बालासाहब से हैमलाक और रिनाई की संयुक्त सेना से हुआ इसमें रिनाई की जाध में मालो लगी और सैकड़ों सैनिक मारे गये। रिनाई 3 दिन बाद मर गया। 17 जुलाई को कानपुर पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। हरिदास सिंह-बितर हो गये। दरियाव सिंह तथा उनके साथियों ने यहाँ से आकर बुधिया युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

जनपद के बाहर दो जिलों में युद्ध:-

(1) जिला इलाहाबाद के जंगल में पीतल में राना बेनी माधव सिंह के साथ जाकर पड़ाव डाला। अंग्रेजी सेना द्वारा घेराबंदी करने पर अंग्रेजी सेना की नौकरी छोड़ने वाले विगुल बादक सलीमदीन मेहतर ने सेना को तितर-बितर करने वाली धुन बजाकर अंग्रेजी सेना को वापस लौटा दिया। दरियाव सिंह राना के साथ अवध चले गये।

(2) दरियाव सिंह ने दिसम्बर 1857 में अपने परिवार के सदस्यों के साथ बादा के जिनकूट की हनुमान धारा पहाड़ी पर जाकर पड़ाव डाला। यहाँ अंग्रेजी सेना की घेराबंदी के बाद यह युद्ध हुआ, जिसमें इनके परिवार के बहादुर सिंह एवं अकबल सिंह दोनों को शान्त हुए।

गिरफ्तारी:-

4 फरवरी 1858 को जयि में एक मद्रास मुखबिर की सूचना देने पर अंग्रेजों ने खाना खाते समय दरियाव सिंह के भाई सुजान सिंह निर्मल सिंह, सुनाथ सिंह, सुभा सिंह और बख्तावर सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

फौसी दी गई:-

केवल 32 दिन में मुकदमों की कार्यवाही पूर्ण करके जयरोक्त अभियुक्तों को 6 मार्च 1858 को फौसी पर लटका दिया गया। 13 मार्च दरियाव सिंह अपने परिवार के साथ शहीद होकर 1857 के बहादुर अंगरेज बन गये। खाना के कर्ते की पुनर्गठन पाठ्य विनीत ने उनके सम्बन्ध में सही लिखा है कि :

खाना के दरियाव सिख गये जो बलिदानी गाथा।

उनकी याद जब भी जाती बरबरा झुक जाता माथा।।



1. जीवन सुजान एवं सुदीप कानपुर, सुनाथ विनाय लखनऊ (1958 ई०) पृष्ठ 128

2. पृष्ठ 128.

3. जिला मुख्यालय फतेहपुर, 1980, पृष्ठ 260